प्रिय भाईयों,

कृपाया हमारे अप्रिल महीने की संदेश-पत्र कुछ दिन पहले ही ग्रहण किजीएगा क्योंकि लेखक कल अफ्रिका रवाना हो रहे हैं । मै, पावल सेवाकाई दल के साथ छः सप्ताह के लिय बाहर हूंगा (वापसी 8 मई) । कोई भी आकस्मिक ईमेल मुझे भेज दिया जाएगा नही तो निकोलस जेक्शन, हमारे सहायाक आप को जवाब देंगे ।

पावल

REVIVAL NEWS

From **Revival Ministries Australia**

P.O. Box 2718 BC TOOWOOMBA Q4350 Australia

Phone: 61-7-46130633; e-mail: rma@revivalministries.org.au

Website: www.revivalministries.org.au

****** APRIL 2007 *** APRIL 2007 *** APRIL 2007 *** APRIL 2007 ******

यह समय है यीशु को राजा बनाना ।

इतिहास की पुस्तक में हम सिखते है कि किस प्रकार दाऊद सारा इस्राएल का राजा बना । इस घटना का खास कारण था कि **समय को पहचानते थे**, ***और इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे, कि इस्राएल को क्या करना उचित है, उनके प्रधान दो सौ थे, और उनके सब भाई उनको आज्ञा में रहते थे*** 1**इतिहास** 12 : 32 । इस आयत का संदर्भ है, कि शाऊल के मृत्यु के बाद , दाऊद यहूदा का राजा बनाया गया, जो उसका ही वंश था । परन्तु शाऊल के पुत्रों में से एक ने शाऊल के स्थान मे इस्राएल की राज्य सम्भाल ली थी । यह परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा नही थी । परमेश्वर ने शाऊल के ऊपर न्याय बयान किया और दाऊद को राजा होने के लिए अभिषेक किया । अब तक समुएल द्वारा दाऊद को राजा के रूप मे अभिषेक किए जाने का 13 साल बित चुका था । यहूदा का राजा बना हुआ सात साल बित चुका था , लेकिन अब दाऊद के लिए समय था कि सारा इस्राएल के घराने के लिए राजा बनना ।

यह समय महान परिवर्तन का था, एक ऐतिहासिक समय, इस्राएल देश के इतिहास में परेमेश्वर का इच्छा पूरा होने का एक विषेश कार्य था । यह समय था परमेश्वर का राज्य के लिए इस्राएल राज्य के लिए दाऊद के ज़रिए पूरा होना ।

यीशु कलीसिया का याजक है

यीशु की कलीसिया की याजकपन प्रगट है निवेदन, प्रार्थना, आरधना, चंगाई द्वारा ; कई अच्छे समय प्रभु के उपस्तिथि में अनुभव किए हैं । परन्तु **इब्रानियों** 3:1 हमें बताती हैं कि ***उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगिकार करते है ध्यान करो*** । 1,800 सालों से यीशु कलीसिया और विश्वासियों के याजक बना हुआ है , उद्धार , क्षमापन और शुद्धीकरण देते हुए लेकिन हरदम कलीसिया की चार दिवारी भितर ही छुपा रहा ।

अब वह राजा के रूप मे जाना जाएगा

जब हम यीशु को प्रेरित स्वीकार करते है तब हम राजकीय अभिषेक के प्रकाश मे प्रवेश करते हैं । यीशु ***मलिकिसिदक की रीति पर युगानायुग याजक है*** । **उत्पत्ति** 14 : 18–20 और **इब्रानियों** 7: 1–10 में हमें मलिकिसिदक की परिचय मिलती हैं , धार्मिकता का राजा और शान्ति का राजा और अति महान परमेश्वर का याजक । उत्पत्ति की पुस्तक से लेकर प्रकाशितवाक्य तक, हमें यीशु राजा और एक राजकीय याजक के रूप मे जानकारी हैं ।

वह राजकीय याजक है

क्योंकि उसके विषय में यह गवाही दी गई है, कि तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानायुग याजक है **इब्रानियों** 7: 17 । **उत्पत्ति** 14: 18 में मेल्कीसेदेक दो गुणा राजा साथ ही साथ ***परमप्रधान का याजक*** भी है । इसलिए यीशु युगानायुग राजकीय याजक है । ***जिस का न पिता , न माता, न वंशावली है, जिस के न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है ; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा । अब इस पर ध्यान करो कि यह कैसा महान था जिस को कुलपति इब्राहिम ने अच्छे से अच्छे माल की लूट का दसवां अंश दिया ।*** (**इब्रानियों** 7 : 3– 4)

यीशु, दाऊद का पुत्र

मूसा के व्यवस्था के निचे याजकीय और राजकीय सेवाकाई के बीच साफ-साफ अन्तर हैं । उज्जियाह राजा ने राजकीय सेवाकाई में मन्दिर के अन्दर अपराध की और फलस्वरूप कोड़ से ग्रसित हुआ (2 **इतिहास** 26: 16–21) । परमेश्वर का साफ-साफ बनाया हुआ नियम का आदर नही किया । राजा दाऊद के ऊपर एक विशेष अनुग्रह था एक भविष्यद्वक्ता , याजक और राजा के सेवाकाईयों को निभाने के लिए, मसीह की रीति पर परन्तु पहला सेवाकाई था एक राजा का । दाऊद का सिंहसान पर निरन्तर रहनेवाला यीशु ही है । उस समय का दाऊद का सिंहसन और इस्राएल राज्य यीशु एक राजा के तौर पर राज्य और शासन को अनन्त के लिए प्रतित करता है और परमेश्वर का राज्य पूर्ण रूप से पृथ्वी पर स्थापित होगी ।

याजकें बलिदान चढ़ाएगा और राजाएँ राज्य करने का अधिकार रखेंगे

व्यवस्था के अन्तर्गत जब राजाओं ने परमेश्वर का दिया हुआ उनके सेवाकाई के सीमा में जब कदम रखा और बलिदान चढ़ाया तो वे न्याय किया गया (1 **शमुएल** 13) । शमुएल बलिदान चढ़ाने के लिए अभिषिक्त थे ; उनको अधिकार चलाने और युद्ध करने के लिए अभिषेक किया गया था । जैसे ही जवान भविष्यद्वक्ता ने येहू को इस्राएल का राजा अभिषेक किया तो सेना के कप्तानों ने तुरन्त उसके राजपद को स्वीकार किया (2 **राजा** 9: 4–13) ।

याजक को शासक (राजा) के रूप में मुकुट पहनाया जाएगा

उनके हाथ से सोना ले, और मुकुट बनाकर उन्हें यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक के सिर पर रख; और उस से यह कह, सेनाओं का यहोवा यों कहता है, उस पुरूष को देख जिसका नाम साख है, वह अपनी ही स्थान मे उगकर यहोवा के मन्दिर को बनाएगा । वही यहोवा के मन्दिर को बनाएगा , और महीमा पाएगा, और अपनी सिंहासन पर विराजमान होकर प्रभुता करेगा । और उसके सिंहसन के पास एक याजक भी रहेगा, और दोनो ं के बीच मेल की सम्पति होगी ।
(**जकर्याह** 6: 11–13)

यहाँ पर महायाजक एक राजा घोषित किया गया है ! याजक को प्रभु का मन्दिर बनाना , एक प्रेरितिय कार्य और यश पाने के लिए । राजा साधारणतः यश पाता है । शान राजाओं का रहता हैं । यीशु याजक और राजा है और वह कलीसिया का निर्माण कर रहा है । जो परमेश्वर का मन्दिर हैं , और वह यश रखता है । वह नहीं चाहता है कि हम केवल याजक के रूप में सेवाकाई करे बल्कि राजाओं के समान उसके साथ राज्य को शासन करें , और फिर यश फैलाए । उसने प्रेरितों को चुना कि संतो को परमेश्वर के घराना में अगुवाई करें , उसके बुलाहट को पूरा करें कि प्रभु की मन्दिर का निर्माण हों । प्रभु का घर एक राजकीय कार्य है :सुलैमान ही था जिसने मन्दिर का निर्माण किया । ज़ेरूबाबेल वह गर्वनर था जिसने मन्दिर पुन:निर्माण किया ; साधरण्तः यह एक याजकीय कार्य नहीं हैं ।

पुराने नियम में जकर्याह एक अन्तिम भविष्यद्वक्ता है, और वह एक परिवर्तन के विषय में कहता है जो व्यवस्था के निचे एक याजक और राजा के बीच के अन्तर हैं जो मल्किसिदेक के रीति पर पहले का याजकपन पुनः निर्माण करने के लिए ।

यीशु मसीह में , मल्किसिदेक की रीति पर पूरी तौर से स्थापित की गई है और अब संतजन उनकी मिरास मे प्रवेश कर रहें है राजाएँ बनकर राज्य और शासन करने के लिए ।

<u>यीशु ने हमें राजा और याजक बनाया है ।</u>

और यीशु मसीह की ओर से , जो विश्वासयोग्य साक्षी और मरे हुओं मे से जी उठाने वालों मे पहीलौठा , और पृथ्वी के राजाओं का हाकीम है , तुम्हें अनुग्रह और शांति मिलती रहे : जो हमसे प्रेम रखता है और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया हैं । और <u>हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक</u> भी बना दिया ; उसी की महीमा और पराक्रम युगानायुग रहें । आमीन । (**प्रकाशितवाक्य** 1: 5–6) ।

<u>हमें राजा के समान राज्य करना हैं</u>

हम ***याजकों का समाज*** है **1पतरस** 2: 9 । उसका मतलब है हम राजा और याजक है । प्रभु चाहता है कि आज हमारे हाथों को राजा पद में, शासक के पद में मज़बुत करें । एक राजकीय याजक का अर्थ यह नहीं कि राजाओं का सेवा करनेवाले परन्तु मल्किसिदेक की रीति पर याजकपन जैसा हमारे प्रभु यीशु का है राजकीय याजक । मल्किसिदेक में, अनन्त क्रम (**इब्रानियों** 7 :3) प्रदर्शित है । यीशु मसीह में, यह क्रम कलीसिया के लिए लाया गया हैं । यह बात नहीं कि कुछ लोंग याजक है प्रभु की सेवाकाई के लिए , और कुछ लोंग राजा है समाज में बृहत रूप में शासन करने के लिए, नहीं !

हमें याजकों का समाज बनाया गया है मल्किसिदेक के रीति पर
जिस में **दोनों पदों में शांति संयम रहें** ।

<u>सारे संतगण राजा और याजक है</u>

कुछ लोग गलत रीति से सिखाते है कि एक भिन्नता है वे लोंग मे जो याजक के रूप में सेवाकाई करते हैं , सलाह देते हुए कि काम पादरी वर्ग के लोगों का है, और जो व्यापार, राजनीति इत्यादि काम करते है, वे लोंग राजा है । वे सब वचनानुसार नहीं हैं जो वह सब दावा करते है और यह गलत शिक्षा याजकपन का क्रम को समझाते है जो वचन साफ-साफ समझाया गया हैं, मल्किसिदेक की रीति पर याजकपन के बाद उत्थान होनेवाला वचनानुसार एक ही है, वह है - हारून का याजकपन । मल्किसिदेक की रीति पर अब साफ-साफ सफलता पाई है हारून की रीति ने ।

दूसरी धारना कुछ बाईबल अनुवाद अनुसार प्रसिद्ध हो चुका है जो **प्रकाशितवाक्य** 1: 6 में गलत प्रयोग किया गया है ; कहने के लिए यीशु ने हमें ***याजकों का एक समाज*** , जो शाही भूमिका से संतो को धोका मे रखता हैं जिसे शासन और राज्य करना चाहिए । याजकों का समाज सल्लाह देता हैं कि हर नागरिक राज्य में याजक हैं जो एक राजा द्वारा शासन किया जाता है ; इसका नतीजा यही होता है कि केवल संतो को सेवाकाई है की राजा का सेवाकाई एक याजक के समान करना । वचन का सत्यता से यह दूर है और पूरी तौर से गलत अगुवाई किया गया हैं परमेश्वर की मनसा समझने के लिए जो वह संतों को देना चाहता है जिसे अभी मसीह के साथ राज्य करते और शासन करते हुए पाए जाने चाहीए ।

यह नई नियम के संतों का शाही स्वभाव है जो बताता है और सच्चाई को दिखाता है कि संतजन पृथ्वी में उत्तराधिकारी होंगे । क्योंकि कलीसिया ऐतिहासिक रीति में यीशु के याजकीय सेवाकाई में ध्यान दिया हैं , कलीसिया एक भवन के रूप मे देखा गया है जहाँ याजकीय सेवाकाई होती है ; प्रार्थना , आरधना इत्यादि और वचन के सेवाकाई में व्यक्तिगत हौसला देने के लिए संदेश दी जाती है लोंगो को सहायता मिले यीशु के साथ चलने के लिए तौभी जब हमें सिखाना आरम्भ होता है यीशु का सच्चा स्वभाव मसीह के रूप में (वायदा किया गया अभिषिक्त राजा) जो दाऊद के सिंहसान पर बैठा ; ***वरन हम परमेश्वर के झूठे ठहरे ; क्योंकि हम ने परमेश्वर के विषय में यह गवाही दी , कि उसने मसीह को जिला दिया यद्यपि नहीं जिलाया , यदि मरे हुए नहीं जी उठते*** (1 **कुरिन्थियों** 15: 25) । परमेश्वर हमें पुत्रत्व के अधिकार में आगे बढ़ाएगा, संतों के समाज के रूप मे चलने के लिए (जो कोई राज्य प्राप्त करेंगे **दानिएल** 7: 18 और 27) । पूरा होने का समय अब है ! यह वह पीढ़ी है जिससे परमेश्वर पुत्रत्व में बढ़ाता है, भूमि मे प्रवेश करने के लिए और उसके ***बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाए*** (2 **पतरस** 1: 4) के ऊपर अधिकार करने के लिए ।

<u>हमें राजा और याजक बनाया गया</u>

राजाएँ -----------------------	**सारे संतों ------------------------**	**याजकें**
मुकुट पहनाया गया -------	**दोनों अभिषेक किया गया-------**	**नियुक्त किया गया**
अधिकार के वारिस		**पवित्र स्थान में सेवकें**

सिंहसान में बैठे है	**बलिदान चढ़ाते है**
आज्ञा देते है	**बिनती चढ़ाते है**
पद्धति तैयार करते है	**प्रर्थना करते है**
शासन करते है	**सेवाकाई करते है**
महीमा लाते है	**पवित्रताई में चलते है**

अधिकतर ये शब्द **अपनी मीरास में चलें** पावल गेलिगैन द्वारा लिखित
नामक पुस्तक के सातवीं अध्याय , दुसरी संस्करण, पृष्ठ 114-119 से लिया गया है ।

<u>विदेशी यात्राएं</u>

भारत – ब्रुस और जीन मेनिंग उत्तर भारत में अप्रिल 3 तक सेवाकाई को जारी रखेंगे ।

अफ्रिका – मार्च 29 से 7 मई तक - पावल गेलिगैन और जेनेट बार्टन और रार्बट पीटकीन 29 तारीख को रवाना होंगे पूर्व और मध्य अफ्रिका के लिए ; मरियम और रोधा 30 को रवाना होंगे।

मार्च 31 - अप्रिल 7 तक नाईरोबी, 8 - 11 बूरन्ड़ी, 12- 17 रवांड़ा
18- 21 काम्पला , उगंड़ा , 22 - 3 मई पश्चिम केनया
नाईरोबी को वापस 3 मई, वापसी 5 मई ।
मरियम और रोधा टर्स पश्चिम केनया में ही 6 महीनों के लिए रहेंगे अनाथालय में सेवा करते हुए ।

भारत / पाकिस्तान – मई – पास्टर पीटर ड़े ब्रेसक़ और दल विशाखापट्नम करेंगे फिर लाहोर और फाईसालाबाद, पाकिस्तान में सेवाकाई करेंगे ।

पश्चिम अफिका – सितम्बर के अंत में पावल और दल दौरा करने की सम्भावना है ।

****

<u>अंतराष्ट्रीय तालीम 2007</u>

दो सप्ताह की पाठशाला साथ ही दो सप्ताह की परामर्श और प्रदेश भ्रमण

सोमवार 25 से शनिवार 21 जुलाई तक
पास्टरों, नायकों और मसीह की देह के सेवा मे बुलाए गए लोंग
बच्चों और 13 साल तक के जवानों के लिए
सोमवार 2 जुलाई से शुक्रवार 6 तक

आयोजन स्थान –SHILOH CENTRE
19 Russell St TOOWOOMBA, Q4350
AUSTRALIA

For further information contact us on email;
postal address PO Box 2718 BC , Toowoomba Q 4350
Revival Ministries Australia Ltd. ACN 082 081 098
Email: rma@revivalministries.org.au

Web: www.revivalministries.org.au